रात्रि क्लास 19-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

मनुष्य मत क्या है और ईश्वरीयमत क्या है यह फिलाव अच्छा है। ईश्वर की मत क्या है यह ईश्वर बताते हैं। गीता को तो खण्डन किया हुआ है। यूं भी ड्रामा में बच्चों के लिये सहज बहुत हैं। जैसे सरदार कहते हैं हमको ब्रह्मा और कृष्ण का सा० हुआ। मूल है ही यह। नारायण को कृष्ण ही कहेंगे। त्रिमूर्ति में भी यह हैं। शंकर को तो बाबा उड़ा देते हैं। यह सा० की भी ड्रामा में नूंध है। बहुतों को सा० होते हैं। ब्रह्मा के पास जाने से राजयोग की शिक्षा मिलेंगी। कई तो झट आ जाते हैं। कई फिर घूटका खाते हैं। त्रिमूर्ति का चित्र तो सभी लिटरेचर में है=ब्रह्मा। ब्रह्माकुमारियां मशहुर हो जावेंगी तो जरूर ब्रह्मा पास ही आवेंगे। उनके पास चलता ही है राजयोग। बहुतों को आगे यह मदद मिलेगा। ड्रामा में नूंध है। मुंझने की बात नहीं। आगे चलना तो वाला होना ही है। प्रजापिता तो मशहुर है। बहुत तुम्हारे पास आवेंगे। तुम जानते हो देवता घराणे में तो जाना ही है। कृष्ण बनने लिये तो बहुत पुरुषार्थ करना है। मदद तो हर प्रकारसे मिलती हैं। हरेक बात सहज कर दी जाती है। शिव बाबा है। बाप आते ही हैं भारत में। भारत ही स्वर्ग था। त्रेता को भी आधा स्वर्ग कहेंगे। बहुतों को निश्चय होता जावेगा। तुम्हारी संस्था वृधि को पाती जावेगी। सन्यासी भी झुकेंगे तुम्हारे आगे। मुक्ति देने वाले तो बाप ही हैं। और तुम हो उनके बच्चे। तुम्हारे पास आवेंगे तो उन्हों को रास्ता मिलेगा। खुदाई खिजमतगार तुम हो ना। स्थापना करने में तुम मदद करते हो। तुम्हारे द्वारा जो स्थापना हुई है वह गाई जाती है। इसलिये बड़े दिन आदि भी इस समय के बनाये जाते हैं। दशहरा दीपमाला, होली, राखड़ी बन्धन सभी इस समय के बातें हैं। सतयुग में उत्सव आदि होते ही नहीं। स्वर्ग तो स्वयं ही बड़े ते बड़ा उत्सव है। यहां उत्सव मनाते हैं। भक्त खुश होते हैं। वहां खुशी मनाने की बात नहीं होती। तुम बच्चों को तो खुशी ही खुशी ही है। यहां रंज है तब कुछ समय के लिये खुशी मिलती है। वहां तो तुम स्वर हैपी रहते हो। जितना तुम आगे चलेंगे देखते रहेंगे। सिर्फ पुरुषार्थ करना है पूरा। अभी टाइम वेस्ट करने का समय नहीं है। टूभव पैसा इकट्ठा करने में इतना बिजी रहते हैं जो फिर इस तरफ ध्यान देते ही नहीं। अबलाएं गरीब निवाज दो मुट्ठी देते हैं तो 21 जन्म लिये जमा हो जाता है। उस लड़ाई आदि में कितना पदमापदम खर्चा करते हैं। तुम बच्चे तो सच्चे पदमापदमपति बनते हो। वह तो गंवाते हैं। तुम बिगर खर्चे कितना पदमभाग्यशाली बनते हो। इसलिये गरीब निवाज गाया हुआ है। वे साधारण रीति पढ़ते हैं, देखते हैं धंधे आदि में समय गंवाते हैं ऐसे थोड़े ही बाप चाहेंगे। कोई भी चिन्तन की बात नहीं। ड्रामा में नूंध है। कल्प पहले भी दिया है इसी अनुसार पद भी पाया है। जो आप समान बनाते रहते हैं उनको ऊंच पद भी मिलता है। बाप आते हैं तो दुनिया भी चेंज होनी ही है। बेहद के बाप का बनने से ही बुधि का ताला खुल जाता है। यहां बैठे हो तो भी सारा झाड़ बुधि में चक्र लगाता रहता है। चक्र फिरता रहता है ना। यहां समय वेस्ट करने का नहीं है। गफलत से नापास हो पड़ते हैं। बेहद का बाप जानते हैं गरीबों के ही ऊंच तकदीर बनती है। यह बहुत भारी ऊंच लाटरी है। कल्प2 यह वरसा लेना है। कल्प पहले भी लिया था। गरीबों को ही फर्सत भी रहती है। साहुकार लोग तो कहेंगे फर्सत नहीं। मरने का भी फर्सत नहीं है। पैसा कमाने में ही मस्त रहते हैं। यह काम बड़ा दुश्मन है। बहुतों की रिपोर्ट इनके ही आते हैं। भगवानुवाच है काम महाशत्रु है। इस पर ही शुरु से लेकर झगड़ा चला आया है। बाप सिर्फ कहते थे भगवानुवाच काम को जीतने से जगत जीत बनेंगे। यह तो बहुत अच्छी रीत समझाना है। कोई अच्छी रीत समझ लेते। कई जिद्दी भी बने आते हैं। यह तो निश्चय है हमारी विजय अवश्य है। श्रीमत पर श्रेष्ठ बन हम अपनी सतयुगी राजधानी स्थापन कर ही लेंगे। इस समय मनुष्य जो बोलते हैं वह पत्थर ही फेंकते हैं। तुम्हारे मुख मन्त्र से तो रत्न ही निकलनी चाहिए। एक एक रत्न लाखों की वैल्यु का है। शास्त्रों के लिये ऐसे गोडे ही कहेंगे। तुम महसूस करते हो। सन्यासी तो कहते हैं सुख काग विष्टा समान है। बाप समझाते हैं यह ----

ब्रह्म महतत्व तुम्हारा घर है। समझ से बैठ यह चित्र आदि निकाले हैं अत्माओं के लोक का। सायंस घमण्डी× घमण्डी कितने कोशिश करते हैं। अभी भूल में रखा ही क्या है। सायंस पर तुम्हारी सायलेन्स ही जीत है। शान्ति के बल को ही योगबल कहा जाता है। योगबल से तुम विजय पाते हो। ज्ञान से फिर राज्य करते हो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार राज्य करते हो। यह लिखा दो कि सेकण्ड में बेहद के बाप से मुक्ति-जीवनमुक्ति। यह बातें सुन सुन कर धारण करनी है' भूलना नहीं है। बाप को भूलने से राज्य गंवाया है। फिर बाप को याद करने से तुम राज्य पाते हो। यह बातें तुम जानते हो थोड़े हो थे। अभी तुम समझते हो बहुत मीठे बच्चे बनने वाले हैं तब तो सभी जाकर झुकते हैं देवताओं के आगे। यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ के आदि मध्य अन्त को जानने से तुम सभी कुछ जान जाते हो। बहुत बड़ी पढ़ाई है। और बहुत प्यार प्रेम× रायलिटी से समझाना होता है। जो उनकी कोशिश हो। बाप अविनाशी है तो अविनाशी आत्मा को ही देखेंगे। विनाशी को देख क्या करेंगे। आत्मा ही सिर्फ अविनाशी है। यह भी समझ बड़ी अच्छी है। बच्चे समझते हैं अभी झाड़ जड़-जड़ीभूत अवस्था को पाया है। फिर नया जरूर बनना है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

रात्रि क्लास 21-11-68 :- ओ शान्ति "विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?"

जैसे सन्यासी होते हैं तो ऐसे नहीं कि उनको घर-बार भूल जाता है। याद रहता है परन्तु उन से ममत्व मिटा देते हैं। मनुष्य भूलता कुछ भी नहीं है। बाकी ममत्व नहीं। ममत्व एक बाप से रखना है। तुमको 32 वर्ष हुये हैं तो भी एक भी उस अवस्था में नहीं है जो सभी भूल जायें। कुछ न कुछ याद पड़ता है। देह को भी भूलना है। आत्मा को आत्मा समझ बाप को याद करना है टाईम लगता है। वह समय जब आयेगा तब कर्मातीत अवस्था को पायेंगे। अभी कोई ने पाया नहीं है। वह अवस्था हो जाये फिर तो विनाश भी शुरू हो जाये। सन्यासी भी पुरुषार्थ करते रहते हैं। उनको तो फिर भी इस पुरानी दुनिया में ही आना है। तुमको तो पुरानी दुनिया में आना न है' इसीलिये नई दुनिया सुख× सुखधाम को याद करना है' बाया शान्ति-धाम जाना है। फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आयेंगे। हिसाब करें तो 500 करोड़ एक्टर्स हैं। आत्मा एक्टर्स हैं ना। जो शरीर द्वारा एक्ट करती हैं। इसमें भी तुम हीरो-हीरोईन हो। यथा मां बाप तथा बच्चे। तुम बेहद के राज्य पाते हो। हीरे जैसा जन्म यह है। लक्ष्मी का नहीं। यह तुम्हारा हीरे जैसा जन्म है। क्योंकि तुम ईश्वरीय सन्तान हो। फिर दैवी सन्तान बनेंगे। इस समय जीत पाने लिये तुम बच्चों की युध चालू है। यह ज्ञान हर एक की बुधि में रहना चाहिए। अभी हमको जाना है। कलियुगी सम्बन्ध सभी मिट जाना है। अभी है पुरुषोत्तम संगम युग। जब कि कलियुगी बन्धन टूटना है। फिर सतयुगी सम्बन्ध में जाना है। तभी बाप घर और सुखधाम याद आते हैं। बुधि में ज्ञान है सन्यासी मुक्ति के लिये कितना धक्का खाते हैं। जाता कोई भी नहीं। जाने का सभी का समय अभी है। सन्यासी आदि भी तुम से नालेज लेंगे। उनको पता पड़ेगा ज्ञान सागर बाप एक ही है उनसे ही ब्रह्माकुमारियों ने ज्ञान लिया है। आजकल छोटेपन से ही लेकर गुरु करते हैं। क्योंकि इस समय सभी वानप्रस्ती हैं। तो छोटे बच्चों को भी कहा जाता है शिव बाबा को याद करो। नई दुनिया में जाना है इस समय सभी की वानप्रस्त अवस्था है। जितना हो सके यह पढ़ाई पढ़नी है। परन्तु शरीर निर्वाह लिये वह पढ़ाई भी पढ़नी है। सभी को यहां रहने का प्रोडक्ट (स्वतंत्रता-छुट्टी) भी नहीं दे सकते। मकान बनाया जाता है। समझा जाता है बहुत ही बनते रहेंगे। बाप के बच्चे वृधि को पाते हैं बहू आती है तो फिर घर अलग करना पड़े। इकट्ठे रह न सके। सतयुग में तो सभी चीजें नई सतोप्रधान होती हैं। बच्चियों को मीरस भी जाकर पीती है। यह सभी है साक्षात्कार। समझते हैं जैसे कि पीया। स्वाद ऐसा

आता है। तो वह भी सन्यास वह भी सन्यास है। सन्यास वा त्याग बात एक ही है। ड्रामा अनुसार उनका हद का सन्यास है। पुरानी दुनिया में रहते हैं तुम अभी संगम पर हो। तुमको कलियुग में नहीं कहेंगे। संगम युग होता ही ब्राह्मणों का है। शुद्र तो पैर देवता। यह ब्राह्मणों का युग बहुत थोड़े टाईम का होता है। 50 वर्ष कहेंगे। 50 वर्ष गुजरने में देरी नहीं लगती है। और यह एक जन्म का ही युग होता है। यह बहुत ही खुशी का युग है। खुशी किसमें है? भगवान बाप हमको पढ़ाते हैं। स्टुडन्ट को कितनी खुशी होनी चाहिए। परन्तु माया तूफान में लाती है। इसलिये इतनी खुशी नहीं रहती है। भगवान तो एक ही निराकार है। वह जन्म मरण में आता नहीं। तुमको उठते बैठते चलते नशा रहना चाहिए। जब तक स्थापना हो जाये पीछे भी याद रहता है। यह है तुम सभी का अन्तिम जन्म। सभी को वानप्रस्त अवस्था है। छोटे बच्चे को भी यह शिक्षा देनी चाहिए। एक दिन आयेगा जो टीचर्स को डायरेक्शन मिलेगा। सभी को कहेंगे कैरेक्टर सुधारना है इस नालेज से। जीवन हीरे जैसा बनाओ। बच्चे प्रदर्शनी आदि में होका भी देते हैं जिनके भाग्य में नहीं है उन से तो कुछ पहुंचता ही नहीं है। और बच्चों को प्रैक्टीस भी डालनी चाहिए। बाप की याद में भोजन बनाना है। जैसे कृष्ण को बहुत प्रेम से याद करते हैं। वह है अटल नवधा भक्ति। ज्ञान से तो सद्गति होती है। वह तो सामने कृष्ण ही देखते रहें। उनसे मेहनत नहीं होती। सिर्फ खुश रहते हैं। यह है निरन्तर याद करने का ज्ञान। पतित से पावन बनाने वाला कोई नहीं है। बाप ने समझाया है क्रियेटर है ही दो। एक तो लौकिक बाप-दूसरा है पारलौकिक बाप। इनको (ब्रह्मा) को क्रियेटर नहीं कहेंगे। तुम शिव बाबा के बने हो। उन से वैहद का वरसा मिलता है। तीसरा कोई है नहीं। बाप तुमको एडाप्ट करते हैं ब्रह्मा द्वारा। इसमें मुंझना नहीं होता है। सगोर बच्चों को तो गवर्मेन्ट अलो नहीं करेगा। जाकी इसमें गवर्मेन्ट को इन्टरफेयर करने की दरकार नहीं। बाप को बहुत ही प्यार से याद करना होता है। प्यार में आंसु भी आते हैं। ऐसे बाबा का ऐसा प्यार जो और कोई याद न आये। ऐसा पुरुषार्थ करना होता है। शिव बाबा की याद हो और स्वदर्शनचक्र फिरता हो तब प्रान तन से निकले। यह है अन्तिम मंत्र। वसीकरण मंत्र। रावण पर विजय पाने का मंत्र। बहुत हैं तो मतभेद में भी आकर पढ़ाई छोड़ देते हैं। तो अपना ही नुकसान करते हैं। तकदीर को लकीर लगाते हैं। समझा जाता है कल्प कल्प ऐसे ही तकदीर को लकीर लगाये नापास हो जायेंगे। यह है भी छी छी दुनिया। इस में रहने दिल नहीं होती। दिन प्रति दिन वेश्यालय की रस्म पड़ती जा रही है। साहुकार लोग तो दो दो औरत रखते हैं। कितना गंद है बात मत पूछो। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 22-11-68 :- मीठे2 बच्चों को सदैव हर्षितमुख रहना चाहिए। विश्व के मालिक बनते हैं। स्वभाव भी दैवी होना चाहिए। मीठे स्वभाव वाले कोशिश करते हैं ना। देवतायें कोशिश में कैसे आये? याद की यात्रा से पावन बनते हैं। शक्ति भी मिलती है। बाप को याद कर एकदम हर्षित रहना चाहिए। तो फिर कब झगड़ा आदि नहीं होगा। झगड़ा है आसुरी। वह धनी को याद नहीं करते हैं। जैसे कि उनका धनी है नहीं। धणी बाप को कहा जाता है। इतने बच्चे हैं बाप के किसको बाप उल्टा सुल्टा नहीं कहते। समझते हैं ड्रामा प्लेन अनुसार इनका ऐसा स्वभाव है। झगड़ा आसुरी पुरुषों में होता है या स्त्रीयों में? अक्सर पुरुषों में होता है। लड़ाई भी वह करते हैं। जहां देखो पुरुष लड़ते हैं। अभी स्त्रीयों को भी सिखलाते हैं। लड़ाई का हुनर बहुत कर के पुरुषों को सिखलाते हैं। पुरुषों को बलवान स्त्रीयों को निर्बल नारी कहा जाता है। अभी निर्बल नारियों को बाप गुप्त में बलवान बनाते हैं। आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा सतोप्रधान बनने से बलवान बनती है विश्व पर राज्य करने लिये।

यह बहुत बलवान होंगे, तुम ही सिर्फ हो जो योगबल से विश्व के मालिक बनते हो। बाप बिल्कुल सहज समझाते हैं। जैसे खुद मीठा है तुमको भी बनाते हैं। बच्चों को भी कहते हैं बहुत मीठे बनो। कब उल्टा सुल्टा मुख से न बोलो। सदैव हर्षित रहो। बाप को याद करने से विश्व का मालिक बनना है। प्रजा भी विश्व की मालिक होती है। अभी यह नशा भी किसको नहीं है। यह देवतायें विश्व के मालिक थे। यह भी किसकी बुद्धि में नहीं आता। कोई भी ऋषि मुनि आदि नहीं जानते। नेती नेती करते आये हैं। पूछो क्रियेटर को जानते हो। तो ऐसे कब नहीं कहेंगे क्रियेटर सर्वव्यापी है। क्रियेटर की क्रियेशन जरूर रहती है। भगवान के लिये पूछेंगे तो सर्वव्यापी कह देंगे। इसलिये भगवान के लिये न पूछ बोलो क्रियेटर को जानते हो। क्रियेटर है बच्चों का। बाप है सभी आत्माओं का। सभी आत्माओं का क्रियेटर है। परन्तु पूछे है बाबा आत्माओं को कब क्रियेट किया तो बाबा कहेंगे यह अनादि खेल है। कब क्रियेट किया यह नहीं कह सकते। यह क्रियेशन विनाश नहीं होते। बाप के सभी बच्चे हैं ड्रामा। यह अनादि है। जो कर के जाते हैं वह फिर विनाश हो जाते हैं। बाप भी अनादि है बच्चे भी अनादि हैं। बाकी वह सतो रजो तमो में आते हैं। बाप तो नहीं आते हैं। बाप की तो महिमा ही महिमा है। लौकिक बाप अपने बच्चों को नूरे रत्न लिखते हैं। बेहद का बाप भी नूरे रत्न लिखते हैं। क्योंकि बच्चे प्यारे लगते हैं। परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बच्चे जानते हैं बाप आते हैं तो कोई भी दुःखी नहीं रह सकते। वह जाता ही तब है जब सभी के दुःख दूर हो जाते हैं। वह आते ही हैं सभी के दुःख दूर करने। मरने का भी दुःख होता है ना। शरीर छोड़ते हैं तो भी वह दुःख नहीं होता। एक शरीर छोड़ दूसरा छोटा लेते हैं। वहां खुशी मनाते हैं। यह ज्ञान रहता है जाकर दूसरा शरीर लिया। मोहजीत राजा की कथा भी है ना। मोहजीत यह हैं परन्तु कथा झूठी बनाये दी हैं। इनके राज्य में अकाले मृत्यु होती ही नहीं। रोने की बात ही नहीं उठती। तो यहां ही निर्मोही बनना चाहिए। सारी पुरानी दुनिया से मोह हटाना है। यह पुरानी दुनिया दुःख की है। बाप नई दुनिया का रास्ता बताते हैं। उसमें सुख ही सुख है। वह है अमरलोक। अभी फिर इसकी स्थापना हो रही है। अमरलोक में तो आयेंगे परन्तु उसमें पद अच्छा पाना चाहिए। बहुतों को रास्ता बताओ। जो वह भी शुक्रिया माने। फलाने ने हमको यह मार्ग बताया। ऊंच ते ऊंच बाबा कहना चाहिए। बाबा अक्षर बहुत मीठा है। क्योंकि बाप से वरसा मिलता है। एक बाप वाया हद के बाप का हद का वरसा। बेहद के बाप का बेहद का वरसा है। यह बातें संगम पर ही होती हैं। कितनी तुम्हारे में शक्ति हैं। सारी दुनिया में सैंज आती हैं। सेकण्ड व सेकण्ड एक्ट न्यारी होती हैं। यह बेहद का ड्रामा है। हमारा पार्ट है सबसे ऊंच हीरो हीरोईन का। भारतवासी ही राज्य पाते हैं। और भारतवासी ही अपना राज्य गंवाते हैं।

एनजावजेक्ट देखने से भी खुशी होती है। हम यह बन रहे हैं। इसलिये बाबा ने वेज भी बनवाई है। बहुत मीठा बनना है। कोई भूत न आना चाहिए देह अभिमान, काम क्रोध की भी भूत हैं जो दुःख देने आये हैं। यह भूत तो सभी में हैं। इन भूतों को भगाने लिये युक्ति भी बाप ने बताई है मुझे याद करो तो तो वह भागते जायेंगे। क्रोध के साथ देह अभिमान भी जरूर है। एकदम झट नहीं निकल सकते हैं। बाप युक्ति बहुत बतलाते हैं भूत कैसे निकल सकते हैं। आधा कल्प के लिये। बाबा कहते हैं कोई भी कोई भी भूत हो तो मेरे पास छोड़ कर जाओ। कहते भी हो बाबा आकर पतितों से पावन बनाओ। बड़ा भूत है ना। बाप आकर सभी भूतों को निकाल देते हैं। एकदम गुल2 बनाये देते हैं। बाप दादा मिलकर तुम्हारा श्रृंगार करते हैं। माता - पिता श्रृंगार करते हैं ना। वह हैं हद के। यह हैं बेहद के माता पिता।

अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

*:-शिव बाबा और विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?:-*